अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) चार अनुत्तर विमान में देव रूप में अधिकतम उत्पन्न हो सकते हैं-
(क) 1 बार (ख) 2 बार
(ग) 4 बार (घ) 15 बार (ख)

(ii) मनुष्य युगलिक की अवगाहना कम से कम होती है-
(क) पृथक्त्व अंगुल (ख) पृथक्त्व हाथ
(ग) 500 धनुष झाझेरी (घ) 100 हाथ (ग)

(iii) देवताओं के घर हैं-
(क) 34 (ख) 10
(ग) 27 (घ) 44 (ग)

(iv) ओदारिक के घरों में आने के आगति स्थान हैं-
(क) 321 (ख) 220
(ग) 101 (घ) 55 (ख)

(v) बेइन्द्रियों में उत्कृष्ट स्थिति में लगातार भव हो सकते हैं-
(क) संख्यात (ख) असंख्यात
(ग) 2 (घ) 8 (घ)

(vi) संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य के मरकर चार अनुत्तर विमान के घर में आने पर जघन्य भव होते हैं-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 5 (घ) संख्यात (ख)

(vii) जघन्य-जघन्य 5वें गमे से वनस्पति से वनस्पति में उत्पन्न होने पर उत्कृष्ट भव होते हैं-
(क) संख्यात (ख) 8
(ग) असंख्यात (घ) अनन्त (घ)

(viii) अशुद्ध गमों की संख्या है-
(क) 2805 (ख) 2889
(ग) 84 (घ) 715 (ग)

(ix) सामान्य अपेक्षा से जघन्य अवधिज्ञान का संस्थान है-
(क) स्तिबुकाकार (ख) आयत
(ग) तप्राकार (घ) पल्यक (क)

(x) चौथे आरे में आहार होता है-
(क) आँवले प्रमाण (ख) बेर के बराबर
(ग) शरीर प्रमाण (घ) अनियत (ग)

(xi) ऊपजाऊ धरती इस आरे के लगते होती है-
(क) पहले (ख) दूसरे
(ग) तीसरे (घ) चौथे (घ)

(xii) 79 दिन की युवा अवस्था इस आरे में होती है-
(क) पहले (ख) दूसरे
(ग) तीसरे (घ) चौथे (ग)

(xiii) आहारक शरीरी मनुष्य में सप्रदेश-अप्रदेश के भंग पाये जाते हैं-
(क) 6 (ख) 3
(ग) 1 (घ) 5 (क)

(xiv) मनयोगी समुच्चय जीव में एक जीव की अपेक्षा भंग पाये जाते हैं-
(क) 1,2 (ख) 5,6
(ग) 1,5,6 (घ) 1,2,3,4,5,6 (क)

(xv) शाश्वत बोलों में सप्रदेश-अप्रदेश के 6 भंगों में से पाया जाता है-
(क) पहला (ख) दूसरा
(ग) तीसरा (घ) चौथा (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) सर्वार्थ सिद्ध से निकला मनुष्य नियमा मोक्ष जाता है। (हाँ)

(ii) संख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय 9वें गमे से मनुष्य के घर आता है तो नियमा युगलिक बनता है। (हाँ)

(iii) संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य के करोड़ पूर्व की उत्कृष्ट स्थिति में अवगाहना 500 धनुष से कम नहीं होती है। (हाँ)

(iv) औदारिक में जघन्य स्थिति में अशुभ अध्यवसाय प्राप्त नहीं होते हैं। (नहीं)

(v) अन्तर्मुहूर्त की जघन्य स्थिति में काल करने वाला पृथ्वीकाय तेजोलेशी नहीं होता है। (हाँ)

(vi) कायसंवेध मात्र इस भव को लेकर ही बोला जाता है। (नहीं)

(vii) प्रथम नरक में आने वाले संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य की जघन्य स्थिति पृथक्त्व वर्ष है। (नहीं)

(viii) मध्यम अवधिज्ञानी क्षेत्र से एक हाथ जानता है तो काल से वही एक आवलिका तक जानता है। (नहीं)

(ix) छः आरे का थोकड़ा जीवाजीवाभिगम सूत्र में चलता है। (नहीं)

(x) वर्तमान में भरत-ऐरवत क्षेत्र में 6 संस्थान मिलते हैं। (नहीं)

(xi) भवी-अभवीपना पारिणामिक भाव है। (हाँ)

(xii) नारकी में असंज्ञीपना शाश्वत है। (नहीं)

(xiii) देव में क्रोध, मान, माया और लोभ अशाश्वत है। (नहीं)

(xiv) तीर्थंकर भगवान का यश दसों दिशाओं में नहीं फैल पाता है। (नहीं)

(xv) वैमानिक देव अवधिज्ञान से अधोलोक में अधिक देखते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

(i)	वैक्रिय के घर	(क) 51	34
(ii)	चार अनुत्तर विमान के घर	(ख) 50	1
(iii)	भवनपति के आगति स्थान	(ग) 32	50
(iv)	सातवें भवस्थान के गमा	(घ) 42	18
(v)	जघन्य 3 भव, उत्कृष्ट 7 भव के गमे	(च) 20 वर्ष	51
(vi)	पाँचवाँ आरा उतरते मनुष्य की स्थिति	(छ) 4	20 वर्ष
(vii)	चौथे आरे में पसलियाँ	(ज) 34	32
(viii)	सामान्य स्वप्न	(झ) 22	42
(ix)	एकान्त असंवुडा में दण्डक	(य) 18	22
(x)	बलदेव की माता स्वप्न देखती है	(र) 1	4

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(I) मेरी अवगाहना पृथक्त्व मास की स्थिति में पृथक्त्व अंगुल होती है। संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य

(ii) मैं जघन्य स्थिति वाला ही होता हूँ। असन्नी मनुष्य

(iii) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 1 पल्योपम 1 लाख वर्ष है। ज्योतिष देव

(iv) बेइन्द्रिय जीव पृथ्वीकाय के घर में जघन्य गमा से आने पर मेरा नाणत्ता नहीं पड़ता है। लेश्या/समुद्घात

(v) मेरी तीन पल्योपम की स्थिति में अवगाहना पृथक्त्व धनुष से लेकर 6 गाउ तक हो सकती है। तिर्यंच युगलिक

(vi) मुझमें दृष्टि परिवर्तन नहीं होता है। युगलिक

(vii) आयुष्य का नाणत्ता जहाँ-जहाँ पड़ता है,वहाँ-वहाँ मेरा नाणत्ता भी पड़ता है। अनुबन्ध

(viii) अवधिज्ञान होने पर हम नियम से होते हैं। मतिश्रुत ज्ञान

(ix) मेरा अवधिज्ञान छोटी नौका के समान तप्राकार होता है। नारक

(x) मुझमें क्रोध कषाय शाश्वत है। नारकी

(xi) मुझे उत्पन्न हुए एक समय ही होने के कारण मुझे कहते हैं। अप्रदेशी
(xii) स्वप्नावस्था में इन्द्रियाँ सोई हुई रहती है और मैं जागता हूँ। मन
(xiii) जब मैं गर्भ में आता हूँ तो मेरी माता 7 स्वप्न देखती है। वासुदेव
(xiv) मेरा अवधिज्ञान का क्षेत्र उत्कृष्ट दो कोस है। धूमप्रभा के नारक
(xv) मैं अन्तर्मुहूर्त में नियमा केवलज्ञानी बन जाता हूँ। परमावधि ज्ञानी

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) औदारिक के 10 घरों के नाम लिखिए।
5 स्थावर के 5 घर, 3 विकलेन्द्रिय के 3 घर, तिर्यंच पंचेन्द्रिय का 1 घर, मनुष्य का 1 घर।

(ii) तेउकाय के घर में आने वाले जीव के 12 भेदों के नाम लिखिए।
5 स्थावर, 3 विकलेन्द्रिय, असंज्ञी ति. पं., संख्यात वर्षायुष्क सन्नी ति. पं., असन्नी मनुष्य, संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य।

(iii) लब्धि में कौनसे द्वार जिस घर में उत्पन्न होने वाले हैं, उसके बोले जाते हैं?
उपपात (स्थिति) एवं परिमाण द्वार।

(iv) जघन्य उत्कृष्ट के बिना 3 भव के 3 गमे कौनसे जीव में कब मिलते हैं ?
संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य मरकर 3,6,9 इन तीनों गमों से सर्वार्थसिद्ध के घर में आता है, तब जघन्य उत्कृष्ट के बिना 3 भव करता है।

(v) अवधिज्ञान का जघन्य क्षेत्र लिखिए।
अवधि ज्ञान का जघन्य क्षेत्र- तीन समय के आहारक, सूक्ष्मपनक जीव (वनस्पति) विशेष के शरीर की जिनती अवगाहना होती है, उतना होता है।

(vi) तैजस कार्मण वर्गणाओं को जानने वाला अवधिज्ञानी द्रव्य-क्षेत्र की अपेक्षा कितना जानता है ?
तैजस, कार्मण और भाषा वर्गणाओं को जानने वाला अवधिज्ञान से क्षेत्र की अपेक्षा असंख्येय द्वीप-समुद्रों को तथा काल की अपेक्षा पल्योपम के असंख्यातवें भाग को जानता है।

(vii) वर्तमान काल को हुण्डा अवसर्पिणी काल क्यों कहते हैं ?
ऐसी घटनायें जो सामान्यतः नहीं होती हैं, वे आश्चर्यजनक घटनायें कहलाती हैं। उन्हें आश्चर्य के नाम से कहा जाता है। इन्हीं आश्चर्यों के कारण से वर्तमान काल को हुण्डा अवसर्पिणी काल भी कहते हैं।

(viii) मिथ्यादृष्टि समुच्चय जीव में बहुत जीव की अपेक्षा भंग लिखिए।
मिथ्यादृष्टि समुच्चय जीव, 24 दण्डक- एक जीव अपेक्षा 1,2 भंग होते हैं।
मिथ्यादृष्टि समुच्चय जीव, 19 दण्डक- बहुत जीव अपेक्षा 1,5,6 भंग होते हैं।
मिथ्यादृष्टि 5 स्थावर में- बहुत जीव अपेक्षा एक छठा ही भंग होते हैं।

(ix) तीर्थंकर की माता द्वारा देखा जाने वाला आठवाँ स्वप्न लिखिए।
आठवें स्वप्न में चिह्न सहित महेन्द्र ध्वजा देखती है। इसका फल यह है कि तीर्थंकर भगवान् के ऊपर तीन छत्र होते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) प्रथम भवस्थान लिखिए।
असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर वैक्रिय के 12 घरों में आता है। (वैक्रिय के 12 घर-पहली नरक, 10 भवनपति, 1 वाणव्यंतर)

कितनी स्थिति से आवे-	जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट करोड़पूर्व।
कितनी स्थिति पावे-	जघन्य 10 हजार वर्ष, उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग।
कितने भव करे-	जघन्य उत्कृष्ट के बिना 2 भव।
आगति स्थान-	कुल आगति स्थान=जीव x घर=1 x 12=12
गमा-	कुल गमे=जीव x घरx गमा=1 x 12 x 9=108

(ii) असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव काल करके नरक में पहली नरक तक ही क्यों जाते हैं ?
असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय बिना मन वाले होने के कारण पल्योपम के असंख्यातवें भाग से अधिक की आयु का बंध नहीं कर पाते हैं। पहली नरक तथा भवनपति, देवों में जीवों की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष तथा उत्कृष्ट एक सागरोपम की होती है। पल्योपम के असंख्यातवें भाग तक की उत्कृष्ट स्थिति पाने वाले असन्नी तिर्यंच इसी कारण पहली नरक तथा भवनपति, वाणव्यन्तर देवों तक ही आते हैं।

(iii) अपर्याप्त तथा पर्याप्त अवस्था में काल करने वाले मनुष्य आगामी भव में कितनी आयु प्राप्त कर सकते हैं ?
अपर्याप्त अवस्था में मरने वाले मनुष्य-तिर्यंच आगामी भव में अधिकतम एक करोड़ पूर्व तक की आयु प्राप्त कर सकते हैं। पर्याप्त अवस्था में काल करने वाले संख्यात वर्ष तथा असंख्यात वर्ष तक की आयु प्राप्त कर सकते हैं।

(iv) संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य मरकर वैक्रिय के 15 घरों में आता है तो जघन्य गमे में अवगाहना तथा समुद्घात का नाणत्ता क्यों पड़ता है ?
1. पृथक्त्व मास की स्थिति में अवगाहना पृथक्त्व अंगुल की होती है। औघिक अवगाहना पाँच सौ धनुष तक होती है। अन्तर होने से नाणत्ता पड़ता है।
2. पृथक्त्व मास की स्थिति में मनःपर्यवज्ञान तथा आहारक समुद्घात की प्राप्ति नहीं हो पाती है। अतः नाणत्ता पड़ता है।

(v) पृथ्वीकाय में आने वाले अप्काय के उत्कृष्ट के 5 गमों का कालादेश लिखिए।
3. औघिक-उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त्त, 22000 वर्ष। 28000 वर्ष, 88000 वर्ष।
6. जघन्य-उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त्त, 22000 वर्ष। 4 अन्तर्मुहूर्त्त, 88000 वर्ष।
7. उत्कृष्ट-औघिक-7000 वर्ष, अन्तर्मुहूर्त्त। 28000 वर्ष, 88000 वर्ष।
8. उत्कृष्ट-जघन्य-7000 वर्ष, अन्तर्मुहूर्त्त। 28000 वर्ष, 4 अन्तर्मुहूर्त्त।
8. उत्कृष्ट-उत्कृष्ट-7000 वर्ष, 22000 वर्ष, 28000 वर्ष, 88000 वर्ष।

(vi) सम्बद्ध-असम्बद्ध अवधिज्ञान को परिभाषित कीजिए।
सम्बद्ध-असम्बद्ध- जिस अवधि ज्ञान के द्वारा जितने क्षेत्र के रूपी पदार्थों को बिना अन्तर के लगातार जानता है उसे सम्बद्ध अवधिज्ञान कहते हैं। जिस अवधिज्ञान के द्वारा जीव बीच-बीच के क्षेत्रों के रूपी पदार्थों को छोड़कर (अन्तर से) शेष क्षेत्रों के रूपी पदार्थों को जानता है, उसे असम्बद्ध अवधिज्ञान कहते हैं।

(vii) नपुंसकवेदी में सप्रदेश-अप्रदेश की अपेक्षा मिलने वाले भंगों को लिखिए।
नपुसंकवेदी समुच्चय जीव, 11 दण्डक- एक जीव अपेक्षा 1,2 भंग पाता है।
नपुसंकवेदी समुच्चय जीव, 6 दण्डक- बहुत जीव अपेक्षा 1,5,6 भंग पाते हैं।
नपुसंकवेदी 5 स्थावर जीव- बहुत जीव अपेक्षा एक छठा ही भंग पाता है।

(viii) वैक्रिय शरीरी वायुकाय में मात्र छठा ही भंग होने का कारण लिखिए।
वायु काय जीव प्रति समय असंख्यात जीव वैक्रिय शरीर बनाना प्रारम्भ करते हैं तथा हमेशा वायुकाय में वैक्रिय शरीरी होते हैं इसलिए इनमें एक छठा ही भंग पाया जाता है।

(ix) भगवान महावीर द्वारा देखा हुआ दसवाँ स्वप्न एवं उसका फल लिखिए।
दसवें स्वप्न में भगवान ने अपने आपको मेरु पर्वत की चूलिका पर श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठे देखा। इसका फल यह हुआ कि भगवान् महावीर स्वामी ने केवलज्ञानी होकर बारह प्रकार की परिषद् में